(Provisional translation)

संयुक्त राष्ट्र की महासभा के सत्तरवें सत्र में शिन्ज़ो अबे

जापान और संयुक्त राष्ट्र

संयुक्त राष्ट्र की महासभा के सत्तरवें सत्र में शिन्ज़ो अबे द्वारा संबोधन

29 सितंबर, 2015

न्यूयॉर्क

30 सितंबर, 2015

जापानी

(फोटो: केबिनेट जन संपर्क कार्यालय)

(फोटो: केबिनेट जन संपर्क कार्यालय)

(फोटो: केबिनेट जन संपर्क कार्यालय)

1.

अध्यक्ष महोदय, देवियों और सज्जनों,

संयुक्त राष्ट्र, जो इस वर्ष अपनी स्थापना की 70वीं वर्षगांठ मना रहा है, वह ऐसे लोगों का समूह है जो विकट परिस्थितियों से सामना करते हुए आसानी से निराश नहीं होते। शायद इसीलिए संयुक्त राष्ट्र विकट परिस्थितियों का सामना करते हुए भी आज इस स्थिति तक पहुंचा है?

अभी हाल ही में ईबोला विषाणु तेजी से फैला। दूसरी तरफ उग्रवाद अपने चरम पर है। और अब हमारे समक्ष बड़ी संख्या में शरणार्थी अपनी जान को जोखिम में डाले हुए इन भयावह परिस्थितियों से भागने की कोशिश कर रहे हैं।

कैसी भी कठिन चुनौतियों हों, हम सभी संयुक्त राष्ट्र के तहत इन चुनौतियों का एकजुट होकर सामना करें। इसके लिए प्रत्येक सदस्य राष्ट्र इस संघर्ष में अपनी विशिष्ट क्षमताओं का योगदान दे।

जापान का अनेक देशों के राष्ट्र-निर्माण में सहायता करने का इतिहास रहा है। हमें मानव संसाधनों को विकसित करने, सर्वाधिक मानवीय सहायता देने और महिलाओं के अधिकारों को कायम रखने का अनुभव है। जापान अपने अनुभव के इस धन को उदारतापूर्वक बांटना चाहता है।

जापान सीरिया और इराक के शरणार्थियों और आंतरिक रूप से विस्थापित लोगों (आईडीपी) को और अधिक सहायता देगा। आर्थिक आंकड़ों के अनुसार इस वर्ष लगभग 81 करोड़ अमेरिकी डॉलर की सहायता दी गई है, जो पिछले वर्ष हमारे द्वारा दी गई सहायता की तुलना में तीन गुना अधिक है।

लेबनान में, हम 20 लाख अमेरिकी डॉलर की अतिरिक्त सहायता उपलब्ध कराएंगे। हम मानवीय और विकास कार्यकर्ताओं के बीच सहयोग में तेजी लाने के लिए इनका उपयोग करेंगे।

हम यूरोपीय संघ के उन पड़ोसी देशों को मानवीय सहायता के रूप में लगभग 25 लाख अमेरिकी डॉलर की नई मदद देंगे, जो सर्बिया गणराज्य और मैकेडोनिया के भूतपूर्व युगोस्लाव गणराज्य के शरणार्थियों और प्रवासियों को शरण देने की समस्या से जूझ रहे हैं।

हालाँकि जापान द्वारा यह सहायता आपात स्थिति से निपटने के लिए दी गई है। लेकिन इसके अलावा, हमारा हमेशा से यह बुनियादी सिद्धांत रहा है कि समस्या की जड़ तक पहुंचा जाए और स्थिति में सुधार किया जाए।

इराक़ी लोगों की रोज़मर्रा की जिन्दगी में स्थिरता लाने के लिए उनकी जल आपूर्ति और सीवेज प्रणाली भरोसेमंद होनी चाहिए। इन प्रयासों के अलावा, जापान शांति कायम रखने में मदद करने के लिए लगभग 7.5 करोड़ अमेरिकी डॉलर की सहायता देने की तैयारी कर रहा है तथा यह सुनिश्चित करना चाहता है कि मध्य पूर्व और अफ्रीका में पूरी तरह शांति बहाल हो।

मैं इस वास्तविकता की ओर भी सीधे तौर पर ध्यान दिलाना चाहता हूँ कि शरणार्थियों के अलावा, ऐसे लोगों की संख्या भी काफी अधिक है जो वहां से भाग नहीं सके।

तबाह हो चुके देशों का पुनर्निर्माण करना और वहां रहने वाले लोगों को फिर से खुशहाल बनाना सीधा और सरल मार्ग नहीं है, लेकिन प्रत्येक इंसान की क्षमताओं का विकास करना और बुनियादी स्तर पर उनका विकास करते हुए उनमें भय और अभाव से लड़ने की क्षमता को विकसित करना ही वास्तव में सबसे ठीक तरीका है।

शिक्षा और स्वास्थ्य की उपलब्धि को महत्व देने की विचारधारा जापान की नीति बन गई है और इसका उद्देश्य विशेषकर सभी उम्र की महिलाओं को सशक्त बनाना है। इस नीति का उद्देश्य पूर्ण "मानव सुरक्षा” सुनिश्चित करना है।

मुझे यह जानकर बेहद प्रसन्नता हुई है कि प्रत्येक व्यक्ति को महत्व देने के ऐसे प्रयासों को संयुक्त राष्ट्र समुदाय द्वारा नए निर्धारित विकास लक्ष्यों में शामिल किया गया है।

2.

जापान एक ऐसा वातावरण बनाना चाहता है जिसमें माताएं अपने नवजात शिशुओं का स्वस्थ विकास होते हुए देख सकें।

इस बारे में सोचते हुए एक बार मुझे एक महिला शरणार्थी के बैग में रखी चीजों को दर्शाने वाला एक फोटो मिला।

यदि किसी को मुश्किल वक्त में भागना पड़े तो वह अपने साथ बैग में क्या ले जाना चाहेगा ?

एक 20 वर्षीय महिला एबोएस्सा, जिसने रबड़ की नाव पर सवार होकर भूमध्य सागर पार किया था, दमिश्क के दक्षिण में स्थित फिलिस्तीनी शरणार्थी शिविर से भागते समय बहुत कम सामान अपने साथ ला सकी थी।

उस फोटो में प्रत्येक वस्तु उसकी 10 माह की बच्ची के लिए थीं: जुराबों का एक साफ जोड़ा, एक टोपी, बेबी फूड का एक जार। लेकिन फोटो को देखते हुए मेरी नज़र एक नोटबुक जैसी चीज़ पर पड़ी।

बारिश से बचाने के लिए प्लास्टिक में लिपटी इस नोटबुक को ध्यान से देखने पर मैंने पाया कि यह एक मातृत्व और बाल स्वास्थ्य पुस्तिका थी, जिसे जापान ने सीरिया के शरणार्थी शिविरों में बांटा था।

जापान में, "मातृत्व और बाल स्वास्थ्य पुस्तिका' नामक यह पुस्तक गर्भवती महिलाओं को दी जाती है। इस नोटबुक में वे अपने और अपने नवजात शिशु के स्वास्थ्य संबंधी रिकार्ड को स्वयं भर सकती हैं। यह पुस्तिका 70 से अधिक वर्षों से इस्तेमाल में है।

क्या ऐसी कोई माता होगी, जो इस पुस्तिका में दर्ज ऊँचाई और वज़न के ब्योरे को देखकर अपने बच्चे के विकास पर प्रसन्न हो, होते हुए भी यह कामना करेगी कि उसका बच्चा बड़ा होकर भय फैलाने वाला बने ?

इस पुस्तिका मां के अनेक आशीर्वाद दर्ज होते हैं जो अपने बच्चे को सेहतमंद होते हुए विकसित होने की कामना करते हैं। यह उन्हें शक्ति देती है, जिससे मां यह कामना करती है कि उसके बच्चे का जीवन व्यर्थ ना जाए।

हमने मातृत्व और बाल स्वास्थ्य पुस्तिका को फिलिस्तीन, सीरिया और जार्डन के शरणार्थी शिविरों में इस उद्देश्य से बांटा है कि मां का यह प्यार उसकी मातृभूमि के स्वरूप को बदल देगा, जो कभी-कभार निराशा और भय उत्पन्न कर देती है।

यह महिला पलायन के दौरान भी ऐसी कामनाओं से भरी इस पुस्तिका को एक खज़ाने की तरह संभालती हुई देखी गई।

मैं इस वास्तविकता से अभिभूत हूं कि प्रत्येक व्यक्ति को सशक्त बनाने वाली मानव सुरक्षा की विचारधारा के सार्थक परिणाम सामने आए हैं, भले ही ये कटु सत्य क्यों न हों।

3.

अध्यक्ष महोदय, देवियों और सज्जनों,

विधि-नियमों और कानून के समक्ष समानता के सिद्धांत वे मूल्य हैं जिन्हें जापान सर्वोच्च महत्व देता है। इन सिद्धांतों का प्रसार भी मनुष्य की क्षमता को विकसित करने से शुरू होता है।

मैं आपको एक कहानी के बारे में बताना चाहूंगा जिसमें एक जापानी युवती भविष्य में कानून के रक्षण बनने वाले पुलिस कर्मियों के जापान द्वारा चलाए जा रहे प्रशिक्षण में जबरदस्त काम कर रही है।

हिंसा और भय को जड़ से उखाड़ने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि अच्छे पुलिस कर्मी और अच्छा पुलिस संगठन तैयार किए जाएं। इस विश्वास से, हम अपनी क्षमता को अफगानिस्तान और अन्य कई स्थलों में पुलिस कर्मियों को विकसित करने में लगा रहे हैं।

जापान, कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य में 2004 से लगातार ऐसे ही प्रयास कर रहा है। जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी, यानि जाइका आज भी राष्ट्रीय पुलिस बल को पुलिस प्रशिक्षण में मदद कर रही है।

आज तक, 20,000 से अधिक पुलिस कर्मी यह प्रशिक्षण ले चुके हैं। इसमें कुछ महिला पुलिस कर्मचारी भी शामिल हैं। इस समूह में पूर्व सशस्त्र विद्रोही सैनिक भी शामिल हैं जिनकी संख्या कम नहीं है। इसका उद्देश्य "ऐसा पुलिस बल तैयार करना है जिसमें आम नागरिकों का भरोसा हो।"

जाइका इस प्रशिक्षण योजना को तैयार करने और उसे लागू करने की भूमिका निभा रही है, और जापान की ओर से कांगो लोकतांत्रिक गणराज्य में हमेशा से महिलाएं ही प्रभारी रही है।

उदाहरण के लिए, इसमें से एक महिला को उसके सहयोगियों की दृष्टि में 'छोटा महाबली' के रूप में देखा जाता है।

पुरुष पुलिस कर्मियों में शामिल यह महिला बेशक नाटे कद की है, लेकिन उसे 'महाबली' की यह उपाधि इसलिए मिली है क्योंकि वह कभी मुश्किलों से मुंह नहीं मोड़ती और हर समस्या से निपटने के लिए हमेशा तत्पर रहती है। वह फ्रांसीसी भाषा जानती है और उसका पूरा इस्तेमाल करती है। राष्ट्रीय पुलिस कर्मी उसका सम्मान करते हैं और उस पर विश्वास करते हैं।

दो वर्ष पूर्व इस महासभा में मैंने इस बात पर बल दिया था कि जापान का नया नारा "अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के सिद्धांत के आधार पर शांति के सक्रिय पक्षधर" का प्रतीक है। मैंने अभी जिस महिला का उल्लेख किया है, वह उन जापानी व्यक्तियों में से एक है जो अग्रणी पंक्ति में अपना योगदान दे रहे हैं।

देवियों और सज्जनों, मैं उन लोगों में से एक हूं जो चाहते हैं कि महिलाएं जापान के भविष्य को तय करने में अग्रणीय भूमिका निभाएं। बाहरी सहायता देने के अलावा, जापान उन नीतियों और उपायों को महत्व देती हैं जिनसे महिलाओं को सुरक्षा, स्वास्थ्य और मानसिक शांति प्राप्त हो तथा साथ ही उनके मानवाधिकारों की रक्षा भी हो सके।

ऐसे देश, जो गृह युद्ध से उबर रहे हैं, वहां जापानी महिलाएं शानदार योगदान दे रही हैं और ऐसा कार्य कर रही हैं जिनसे कानून व्यवस्था लागू करने वालों को प्रशिक्षण मिलता है। यह मेरे लिए अत्यंत गर्व की बात है।

अब तक विभिन्न अवसरों का लाभ उठाते हुए, मैंने अंतर्राष्ट्रीय समुदाय से 21वीं सदी को एक ऐसा युग बनाने का आग्रह किया है जिसमें महिलाओं के मानवाधिकारों का उल्लंघन न हो।

आज मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता हो रही है कि जापान ने भी संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद संकल्प 1325 के आधार पर, महिलाओं की भागीदारी और सुरक्षा के संबंध में अपनी कार्य-योजना बनाने का निर्णय लिया है।

जापान की कार्य-योजना में महिलाओं और लड़कियों को हिंसा से बचाना और उन्हें बुनियादी स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना बेहद महत्वपूर्ण हैं।

इसके अलावा, पिछले दो सालों से लगातार दूसरे वर्ष, हमने महिला विश्व सम्मेलन: WAW! (वाव !) 2015 का आयोजन किया, जहां एक ऐसे समाज का निर्माण करने के उद्देश्य से सार्थक चर्चा की गई जिससे महिलाएं आगे आ सकें।

4.
अध्यक्ष महोदय, देवियों और सज्जनों,

क्या यह सच नहीं है कि संयुक्त राष्ट्र एक ऐसा "आशावादी होते हुए यथार्थवादी" मंच है, जो हमें एकजुट करता है?

यह संगठन असहाय होकर भविष्य के लिए मायूस नहीं होता। यह वास्तविकता से अपनी आंखें नहीं मूंदता। संयुक्त राष्ट्र ने इसी सच्चाई की बुनियाद पर अपने 70 साल का इतिहास बनाया है।

ऐसे अनेक विषय हैं जिन पर मैं वास्तविक स्थिति का केवल जायजा लेने से अधिक कुछ भी नहीं कर सकता।

इनमें से पहला उत्तरी कोरिया के संबंध में हे। उत्तरी कोरिया के अपहरण, परमाणु और मिसाइल मुद्दों सहित बकाया मुद्दों के व्यापक समाधान के लिए जापान संबंधित देशों के सहयोग से कार्य करेगा।

इस वर्ष हिरोशिमा और नागासाकी में ऐटमी बमबारी के 70 वर्ष पूरे हो गए हैं, और यह वर्ष हमें हमारे दु:ख और पीड़ा की याद दिलाता है।

हालाँकि यह खेदजनक है कि कुछ क्षेत्रों में आज भी बिना किसी पारदर्शिता के, परमाणु हथियारों में निरंतर बढ़ोतरी हो रही है। इस वर्ष परमाणु हथियार अप्रसार संधि (एनपीटी) के दलों का समीक्षा सम्मेलन भावी परमाणु निरस्त्रीकरण और अप्रसार के दिशानिर्देश बनाने में असफल रहा है।

अमेरिका और रूस के बीच परमाणु हथियारों में निरंतर कमी होती रहनी चाहिए। लेकिन जापान जोर देकर यह कहना चाहेगा कि परमाणु हथियार रखने वाले अन्य देशों को भी अपने हथियारों को कम करने की दिशा में कदम उठाने चाहिए।

परमाणु हथियारों को पूरी तरह समाप्त करने के अपने दृढ़ संकल्प के रूप में जापान अंतर्राष्ट्रीय समुदाय द्वारा संयुक्त कार्रवाई को बढ़ावा देने के लिए एक नए संकल्प का प्रारूप तैयार कर रहा है। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं कि इस संकल्प को बड़ी संख्या में देशों से समर्थन मिलेगा।

5.
अध्यक्ष महोदय, देवियों और सज्जनों,

इस वर्ष, जब हम संयुक्त राष्ट्र को उसकी स्थापना की 70वीं वर्षगांठ पर बधाई दे रहे हैं, सुरक्षा परिषद में सुधार के संबंध में एक व्यापक अभियान शुरू हो चुका है।

पिछले संयुक्त राष्ट्र महासभा सत्र के दौरान सुरक्षा परिषद के सुधार पर समर्पित व्यक्तियों और विभिन्न देशों द्वारा व्यापक गहन चर्चा हुई थी। और दो सप्ताह पहले, यहां इसी कक्ष में, वही उत्साह वर्तमान सत्र में भी पाया गया और जिसकी पूरी सभा ने सराहना की थी।

इसी उत्साह से परिपूर्ण होकर और, इस आस्था से प्रेरित होकर कि जापान को एक दृढ़ संकल्प के साथ क्या भूमिका निभानी चाहिए, मैं निरंतर उस पथ की खोज करता रहूंगा, जिसके द्वारा हम, अध्यक्ष महोदय, और सदस्य देशों के सहयोग से सुरक्षा परिषद में सुधार को साकार रूप दे सकें। जिससे कि जापान सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बने और इस हैसियत से उचित योगदान देना चाहता है।

सर्वप्रथम, द्वितीय विश्व युद्ध के समाप्त होने के बाद से, जापान ने 70 वर्षों तक एक शांतिप्रिय राष्ट्र की हैसियत से अपनी स्थिति को कायम रखा है, और हमने दुनिया में शांति और समृद्धि को बढ़ावा देने के अनेक सफल प्रयासों का कीर्तिमान अर्जित किया है।

कंबोडिया और तिमोर-लेस्ते में, जापान ने उत्कृष्ट कूटनीतिक प्रयास किए हैं और शांति अभियान के तहत कार्मिक भेजे हैं, और उस के बाद में, अनेक वर्षों तक सहायता प्रदान की है।

शांति अभियान को लागू करने के तीन चरण हैं। पहले चरण में यह निर्णय लिया जाता है कि कहां और क्या कार्य किया जाना है। इसके बाद कार्मिकों को विशेष रूप से तैयार किया जाता है और धन की व्यवस्था की जाती है, तथा अंत में जमीनी स्तर पर वास्तविक अभियान शुरू किया जाता है।

जापान इन चरणों के बीच उत्पन्न होने वाले अंतर को दूर करने के लिए 'अंतर पाटने' की कारगर भूमिका निभा रहा है। इसके अलावा, जापान अग्रणी भूमिका निभाकर सकारात्मक योगदान दे रहा है जिसमें इन तीनों चरणों में वह अपने द्वारा किए गए कार्य, उसकी पूरी जिम्मेदारी लेता है।

इस समय दक्षिण सुडान में जापान की आत्मरक्षा बल की इंजीनियरिंग यूनिट चौबिसों घंटे कार्य कर रही है। केन्या में, हमारे जमीनी आत्मरक्षा बल के विशेषज्ञ केन्या, युगांडा, तंजानिया, और रवांडा के सशस्त्र बलों को भारी इंजीनियरिंग उपकरणों का बेहतरीन ढंग से कैसे उपयोग किया जाता है, सिखा रहे हैं। कुछ शांति अभियान ऐसी जगहों पर बाधित हो रहे हैं जहां कोई सड़कें नहीं हैं और पुल ध्वस्त हो चुके हैं।

जापान ने हाल में अपनी ओर से एक कानूनी घरेलू ढांचा तैयार किया है, जिससे वह आगे चलने वाले शांति अभियानों में व्यापक योगदान दे सके।

दूसरे, जापान "मालिकाना अधिकार" और "भागीदारी" दोनों को महत्व देता है।

जापान का वर्षों से यह मानना रहा है कि निराशा से लड़ने और सुख शांति बनाए रखने के लिए संबंधित पक्षों के पहलू और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग, दोनों महत्वपूर्ण होते हैं।

सभी लोग मालिकाना अधिकार प्राप्त कर रहे हैं जिसके द्वारा वे स्वयं अपने जीवन की दिशा तय करते हैं और यही हमारा अंतिम उद्देश्य है। इसी दृष्टिकोण पर बल देने से "मानव सुरक्षा" को अहमियत देने की अवधारणा अस्तित्व में आई है।

तीसरे, जापान हमेशा से ऐसा राष्ट्र होने का प्रयास करता रहा है जो संबंधित पक्षों के विचारों को गंभीरता से सुनता है।

तीन दिन पहले, मैंने लगातार तीसरे वर्ष अफ्रीकी क्षेत्रीय आर्थिक समुदाय (आरईसी) की अध्यक्षता करने वाले देशों के नेताओं के साथ मुलाकात की।

TICAD (टीआईसीएडी) - अंतर्राष्ट्रीय टोक्यो अफ्रीकी विकास सम्मेलन नामक एक उन्नत अफ्रीकी विकास समूह है, जो 20 वर्षों से जापान में आयोजित किया जाता है। अगले वर्ष, मैं अफ्रीका में पहली बार टीआईसीएडी की बैठक बुलाऊंगा, और मैं अफ्रीकी लोगों के और अधिक विचारों को जानना चाहूंगा।

पिछली रात मैंने प्रशांत द्वीप समूह के देशों के नेताओं के साथ भी बैठक की। हम सभी ने ऐसे मसलों पर चर्चा की, जैसे कि "5 नवंबर को विश्व सुनामी दिवस" मनाना और सुनामी के संदर्भ में अपनी क्षमता में सुधार करना।

जापान 1958 में पहली बार सुरक्षा परिषद का गैर-स्थायी सदस्य बना था। यह जापान को संयुक्त राष्ट्र की मान्यता मिलने से दो वर्ष बाद था। यदि आपके उदार समर्थन से इस शरद ऋतु में जापान का फिर से चयन होता है तो हमें परिषद की 11वीं बार सेवा करने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

जापान ऐसा देश है जिसने खुद ही बार-बार अपने साथियों से अपनी समीक्षा कराई है।

मैंने ऊपर जिन तीन बातों का उल्लेख किया है, वे जापान की क्षमता को जताते हैं, और जिन्हें आप सब मानते हैं। जापान अपनी इस क्षमताओं का संयुक्त राष्ट्र को सुदृढ़ करने में इस्तेमाल करना चाहता है।

जापानी लोग "यूएन" के इन दो शब्दों को बड़ी आशा से देखते हैं और आगे भी देखते रहेंगे। "अंतर्राष्ट्रीय सहयोग के सिद्धांत के आधार पर शांति के सक्रिय पक्षधर' के रूप में अगुवाई करते हुए जापान, संयुक्त राष्ट्र को 21वीं सदी में एक कारगर निकाय बनाने के उद्देश्य से सुरक्षा परिषद सुधार कराने के लिए प्रतिबद्ध है, और तत्पश्चात् सुरक्षा परिषद के स्थायी सदस्य के रूप में विश्व शांति और समृद्धि के लिए व्यापक योगदान देते हुए अपनी जिम्मेदारी निभाएगा।

मैं अपना यह भाषण इस आशा के साथ समाप्त कर रहा हूँ कि मुझे आप सभी का भरपूर समर्थन मिलेगा।

धन्यवाद।